दो दर्पण

व्यवस्था और सुसमाचार

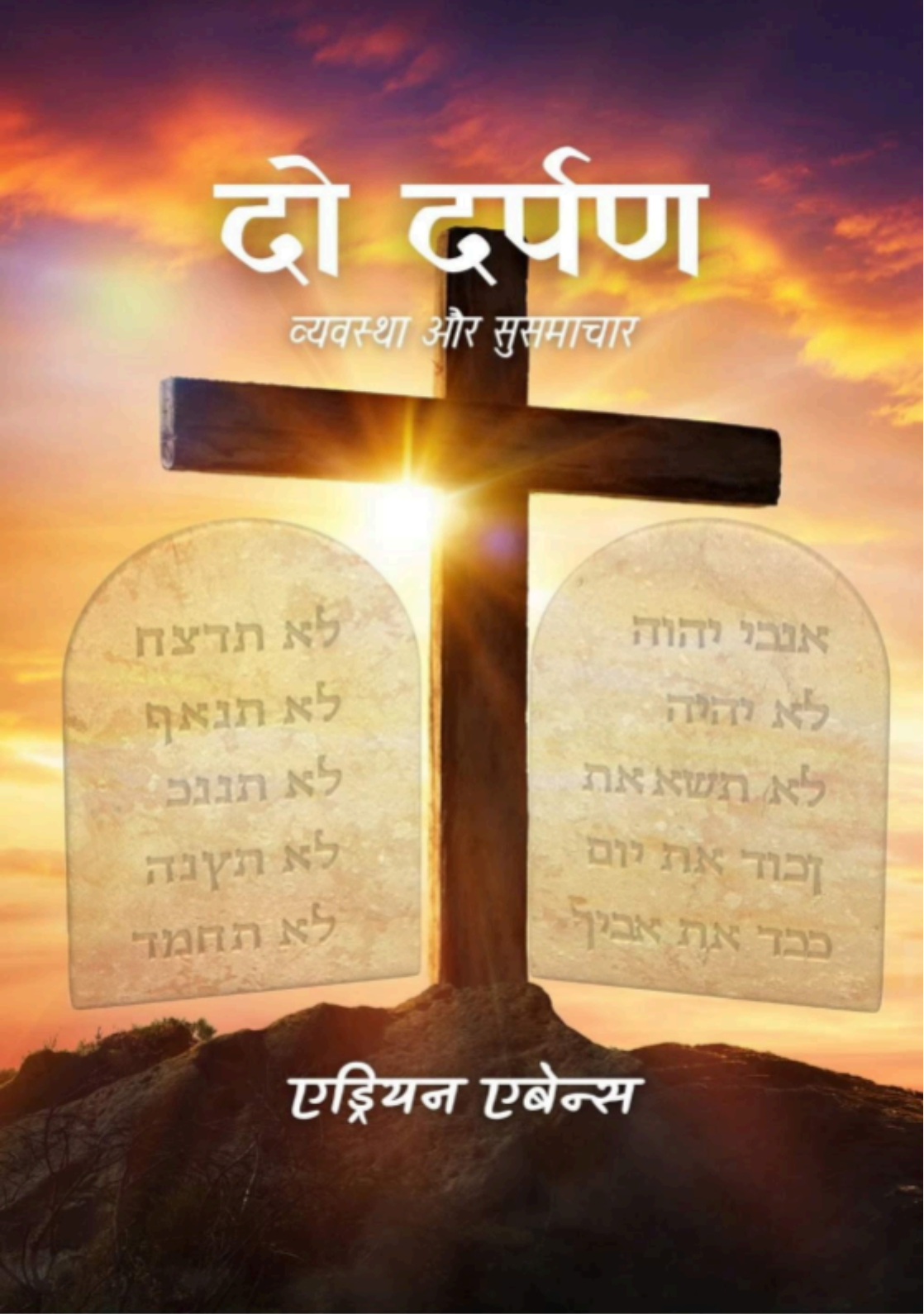

एड्रियन एबेन्स

दो दर्पण: व्यवस्था और सुसमाचार

द्वारा मुद्रित

MARANATHA
MEDIA

maranathamedia.com

09 Sep, 2025

इस पुस्तक का अनुवाद ब्रिटनी विशाल मैकवान ने किया है और इसका प्रूफ रीडिंग सिस्टर वायलेट डिसूजा ने किया है।

सामग्री

सामग्री..... 3
ईश्वर को खोजना और जानना.....3
कृतघ्नता और स्वतंत्रता ईश्वर के बारे में गलत दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है..... 5
शैतान परमेश्वर के चरित्र को गलत तरीके से प्रस्तुत करता है..... 8
एक दिव्य दर्पण की आवश्यकता है..... 10
दो दर्पण..... 11
मध्यस्थ के माध्यम से कानून तक पहुँचना.....14
वेल हटाना.....17
सुसमाचार दर्पण की परिभाषा.....19
जहाज़ से दया का आसन न हटाएँ.....30

ईश्वर को खोजना और जानना

परमेश्वर असल में कैसा है? यह एक आसान सवाल है, लेकिन बाइबल में लिखी बात की वजह से यह और भी जटिल हो जाता है:

> यशायाह 55:8-9 क्योंकि मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है, यहोवा की यही वाणी है। (9) क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।
>
> यिर्मयाह 17:9 मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?
> रोमियों 3:10-12 जैसा लिखा है, "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।" (11) कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं। सब के सब भटक गए, सब के सब निकम्मे हो गए; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं।
>
> 1 कुरि 2:14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है।

हम स्वभाव से ही धोखेबाज़ हैं, हम समझ नहीं पाते, और वास्तव में परमेश्वर की खोज नहीं करते। परमेश्वर के विचार हमसे बिल्कुल अलग हैं। इसलिए, यह असंभव है कि

हम इस सोच के साथ परमेश्वर को खोजें और पाएँ कि हम ही उन्हें खोजने की इच्छा जगाते हैं। परमेश्वर ही हैं जो हमें खोजते हैं। खोई हुई भेड़ की कहानी में यही दर्शाया गया है।

> लूका 15:4-5 तुम में से ऐसा कौन है जिसकी सौ भेड़ें हों और उनमें से एक खो जाए तो निन्नानवे को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए तब तक खोजता न रहे? (5) और जब मिल जाती है, तो आनन्द से उसे अपने कन्धों पर उठा लेता है।

दुखद सच्चाई यह है कि जहाँ हममें भेड़ों जैसी अज्ञानता है, वहीं साँप जैसा स्वभाव भी है। इसका मतलब है कि जब परमेश्वर हमें ढूँढ़ता है, तो हम स्वाभाविक रूप से उसे दूर धकेल देते हैं और अस्वीकार कर देते हैं।

> यूहन्ना 1:5 और ज्योति अन्धकार में चमकती है, परन्तु अन्धकार उसे ग्रहण नहीं कर पाता।
>
> यूहन्ना 1:11 वह अपने घर आया, और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

निम्नलिखित श्लोक में, के लिए शब्द क्रोध वास्तव में इच्छा और शब्द ख़िलाफ़ अनुवाद किया जा सकता है की *ओर*:

> रोम 1:18 क्योंकि परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो
>
> [Suppress NIV, NLT]

कृतघ्नता और स्वतंत्रता ईश्वर के बारे में गलत दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है

पौलुस आगे कहता है कि परमेश्वर के विषय में सत्य को दबाने से क्या होता है, इस पर ध्यान दीजिए।

> रोमियों 1:19-23 क्योंकि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। (20) क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। (21) इसलिये कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई नहीं की।न तो आभारी थे; परन्तु व्यर्थ कल्पना करने लगे, यहां तक कि उन का मूर्ख मन अन्धेरा हो गया। (22) वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। (23) और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।

बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से प्रकट किया है कि वह कैसा है ताकि हम निराधार रहें। परमेश्वर ने हमें वह सब कुछ दिया है जो हमारे पास है और इसलिए हम उसकी दयालुता के लिए उसके आभारी हैं। शैतान ने हमारे प्रथम माता-पिता को यह विश्वास दिलाया कि परमेश्वर के इरादे हमारे प्रति बिल्कुल भी दयालु नहीं थे और हम वास्तव में जीवन के लिए उस पर निर्भर नहीं थे।

> उत्पत्ति 3:4-5 तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे। (5) क्योंकि परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।

यह झूठ (है) कि हम जीवन के लिए ईश्वर पर निर्भर नहीं हैं, हमें स्वाभाविक रूप से कृतघ्न बनाता है और इसलिए हम ईश्वर के बारे में अपनी धारणाएँ बदल देते हैं ताकि हम उनसे दूरी बनाए रख सकें और अपनी मनचाही चीज़ें कर सकें। यह झूठ कि हमारा अपना जीवन है, बेबीलोन की नींव है। बेबीलोन के पहले निर्माता, निम्रोद ने निम्नलिखित कहा:

> "अब यह निम्रोद ही था जिसने उन्हें परमेश्वर का इतना अपमान और तिरस्कार करने के लिए उकसाया। वह नूह के पुत्र हाम का पोता, एक साहसी व्यक्ति और बहुत बलवान था। उसने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि वे अपनी शक्ति का श्रेय परमेश्वर को न दें, मानो वे उसी के माध्यम से सुखी हैं, बल्कि यह विश्वास दिलाएँ कि यह उनका अपना साहस था जिसने उन्हें वह सुख प्रदान किया। उसने धीरे-धीरे शासन को अत्याचार में बदल दिया, क्योंकि उसे लोगों को परमेश्वर के भय से मुक्त करने का कोई और रास्ता नहीं सूझ रहा था, सिवाय इसके कि वह उन्हें अपनी शक्ति पर निरंतर निर्भर बनाए रखे..."*जोसेफस. पुरावशेष पुस्तक 1 अध्याय 4 अनुच्छेद 2*

परमेश्वर के प्रचुर उपहारों के लिए कृतज्ञता न दिखाने की यह प्रवृत्ति प्राचीन काल के उस साँप से उत्पन्न हुई जिसे शैतान और शैतान कहा जाता है। उसने आदम और हव्वा से कहा था कि उनमें जीवन है। अगर यह सच होता, तो परमेश्वर द्वारा उनके जीवन पर किए गए किसी भी दावे को उनके अधिकारों पर आक्रमण माना जाता; क्योंकि वह स्वभाव से ही नियंत्रणकारी और अत्याचारी है।

> शैतान सोचता था कि वह स्वयं स्वर्ग में फ़रिश्तों का प्रिय है। उसे बहुत ऊँचा स्थान दिया गया था; लेकिन इससे उसे अपने रचयिता के प्रति

कृतज्ञता और स्तुति की भावना नहीं हुई। वह स्वयं ईश्वर की ऊँचाई तक पहुँचने की आकांक्षा रखता था। वह अपनी ऊँचाई पर गर्व करता था। वह जानता था कि फ़रिश्तों द्वारा उसका सम्मान किया जाता है। उसे एक विशेष कार्य पूरा करना था। वह महान रचयिता के निकट था, और अनन्त ईश्वर को आच्छादित करने वाली महिमामय प्रकाश की अविरल किरणें विशेष रूप से उस पर चमक रही थीं। 1SP 18

लूसिफ़र को दिए गए उच्च सम्मानों को ईश्वर के विशेष उपहार के रूप में नहीं सराहा गया, और इसलिए, उसके सृष्टिकर्ता के प्रति कोई कृतज्ञता नहीं प्रकट हुई। वह अपनी चमक और महिमा पर गर्व करता था और ईश्वर के बराबर होने की आकांक्षा रखता था। PP 37

लूसिफ़र में परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता की कमी के कारण वह परमेश्वर के नियम को प्रतिबंधात्मक और नियंत्रणकारी मानने लगा।

उसने [शैतान ने] परमेश्वर के वचन को झूठा साबित करने की कोशिश की थी और उसकी शासन योजना को गलत तरीके से प्रस्तुत किया था, यह दावा करते हुए कि परमेश्वर फ़रिश्तों पर नियम थोपने में न्यायसंगत नहीं था; बल्कि अपने प्राणियों से अधीनता और आज्ञाकारिता की अपेक्षा करके, वह केवल स्वयं को ऊँचा उठाने की कोशिश कर रहा था। PP 42

जब यह घोषणा की गई कि उसे और उसके सभी समर्थकों को परमानंद के धाम से निष्कासित कर दिया जाएगा, तो विद्रोही नेता ने निर्भीकता से सृष्टिकर्ता के विधान के प्रति अपनी अवमानना का परिचय दिया। **उसने अपना दावा दोहराया कि <u>स्वर्गदूतों की जरूरत है</u> <u>कोई नियंत्रण नहीं,</u>**

> **<u>लेकिन</u> <u>उन्हें अपनी इच्छा पर चलने दिया जाना चाहिए</u>** जो उन्हें हमेशा सही राह दिखाएगा। उन्होंने ईश्वरीय नियमों को उनकी स्वतंत्रता पर प्रतिबंध बताते हुए उनकी निंदा की और घोषणा की कि उनका उद्देश्य कानून का उन्मूलन सुनिश्चित करना है; ताकि इस प्रतिबंध से मुक्त होकर, स्वर्ग के समूह अस्तित्व की एक अधिक उन्नत, अधिक गौरवशाली अवस्था में प्रवेश कर सकें। GC 499

अगर यह सच था कि स्वर्गदूत जीवन के लिए ईश्वर पर निर्भर नहीं थे और उनकी अपनी इच्छा और बुद्धि उन्हें सही दिशा दे सकती थी, तो ईश्वर के नियम को व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रताओं पर आक्रमण के रूप में देखा जाना चाहिए और ईश्वर को नियंत्रणकारी और अत्याचारी के रूप में देखा जाना चाहिए। जब आदम और हव्वा ने ज्ञान के वृक्ष का फल खाया, तो उन्होंने इस झूठ को अपनाया कि हम में जीवन है और इसलिए हम ईश्वर से स्वतंत्र हैं।

> उसने [आदम] उसके भाग्य को साझा करने का निश्चय किया; अगर उसे मरना ही है, तो वह उसके साथ मर जाएगा। आखिरकार, उसने सोचा, क्या बुद्धिमान साँप की बातें सच नहीं हो सकतीं? हव्वा उसके सामने उतनी ही सुंदर और स्पष्ट रूप से उतनी ही मासूम थी जितनी इस अवज्ञाकारी कृत्य से पहले थी। उसने उसके प्रति पहले से कहीं अधिक प्रेम व्यक्त किया। उसमें मृत्यु का कोई लक्षण नहीं दिखाई दिया, और उसने परिणामों का सामना करने का निश्चय किया। उसने फल उठाया और जल्दी से खा लिया। PP 56,57

> परमेश्वर के चरित्र का वही मिथ्या चित्रण करके, जैसा उसने स्वर्ग में किया था, जिससे उसे कठोर और अत्याचारी समझा गया, शैतान ने मनुष्य को पाप करने के लिए प्रेरित किया। और अब तक सफल होने के

> बाद, उसने घोषणा की कि परमेश्वर के अन्यायपूर्ण प्रतिबंधों के कारण मनुष्य का पतन हुआ, क्योंकि वे उसके स्वयं के विद्रोह का कारण बने थे। {GC 500.2}

आत्मा की अमरता के सिद्धांत को दुनिया के विभिन्न धर्मों में लगभग सर्वत्र माना जाता है। बेशक, नास्तिकता की शिक्षाएँ स्वयं से परे किसी भी कानून को थोपा हुआ और स्वतंत्रता के लिए खतरा मानती हैं, इसलिए फ्रांसीसी क्रांति की अराजकता इसी विश्वास का स्पष्ट परिणाम है।

शैतान परमेश्वर के चरित्र को गलत तरीके से प्रस्तुत करता है

शैतान ने अंतर्निहित जीवन के इस झूठ का उपयोग परमेश्वर के चरित्र को गलत तरीके से प्रस्तुत करने के लिए किया और उसे एक नियंत्रणकारी, प्रतिशोधी तानाशाह के रूप में प्रस्तुत किया जो उसके विरुद्ध अपराध करने वालों को मृत्यु दंड देता था।

> शैतान ने परमेश्वर पर क्षमा न करने का आरोप लगाया, क्योंकि वह उन लोगों को अनुग्रह के साथ स्वीकार नहीं करता था जो उसके नियमों का उल्लंघन करते थे और इस प्रकार उसके चरित्र को गलत तरीके से प्रस्तुत करते थे (आरएच 9 मार्च, 1897, पैरा. 5)

> लूसिफ़र ने यह तर्क दिया कि परमेश्वर के नियम के कारण स्वर्ग और इस पृथ्वी पर अन्याय विद्यमान है। इससे परमेश्वर की सरकार पर मनमानी करने का आरोप लगा। लेकिन यह एक झूठ है, जिसे सभी झूठों के रचयिता ने गढ़ा है। परमेश्वर की सरकार स्वतंत्र इच्छा की सरकार है,

और विद्रोह या आज्ञाकारिता का कोई भी कार्य स्वतंत्र इच्छा का कार्य नहीं है। {एसटी 5 जून 1901, अनुच्छेद 4}

एक ओर शैतान ने परमेश्वर पर कठोर, कठोर और क्षमा न करने का आरोप लगाया।

शैतान ने परमेश्वर के चरित्र का गलत चित्रण किया था, और यह आवश्यक था कि अविनाशी संसारों, स्वर्गदूतों और मनुष्यों के सामने सही चित्रण किया जाए। शैतान ने घोषणा की थी कि परमेश्वर आत्म-त्याग, दया और प्रेम के बारे में कुछ नहीं जानता, बल्कि वह कठोर, कठोर और क्षमाशील है। शैतान ने परमेश्वर के क्षमाशील प्रेम की कभी परीक्षा नहीं ली; क्योंकि उसने कभी सच्चा पश्चाताप नहीं किया। परमेश्वर के बारे में उसके चित्रण गलत थे; वह एक झूठा गवाह था, मसीह पर दोष लगाने वाला था, और उन सभी पर दोष लगाने वाला था जो शैतानी जूए को उतार फेंकते हैं, और स्वर्ग के परमेश्वर के प्रति स्वेच्छा से निष्ठा रखने के लिए वापस आते हैं। {आरएच, 9 मार्च, 1897 अनुच्छेद 3}

शैतान परमेश्वर की स्पष्ट दया और अनुग्रह को छिपा नहीं सका। इसलिए शैतान ने दूसरी चाल चलते हुए कहा कि परमेश्वर कमज़ोर है और उसकी माँगों के आगे झुक जाएगा।

एक दयालु सृष्टिकर्ता, लूसिफ़र और उसके अनुयायियों के प्रति गहरी दया से, उन्हें उस विनाश के गर्त से बाहर निकालने का प्रयास कर रहा था जिसमें वे डूबने वाले थे। लेकिन उसकी दया का गलत अर्थ निकाला गया। लूसिफ़र ने ईश्वर की सहनशीलता को अपनी श्रेष्ठता का प्रमाण

> बताया, एक संकेत कि ब्रह्मांड का राजा अभी भी उसकी शर्तों को स्वीकार करेगा। पृष्ठ 39।

शैतान के झूठ ने एक गहरा नैतिक अंधकार फैला दिया। परमेश्वर का असली चरित्र इस झूठ के जाल में लिपटा हुआ था। इसलिए शैतान स्वर्गदूतों में सबसे आगे था और परमेश्वर को किसी और से बेहतर जानता था, इसलिए यह समझना मुश्किल था कि वह जो कह रहा था वह गलत था।

> शैतान ने संसार के सामने परमेश्वर के चरित्र को इतना गलत ढंग से प्रस्तुत किया था कि मनुष्य परमेश्वर से दूर हो गया; 11 अप्रैल, 1895
> पाप के कारण मनुष्य बुराई की संतान, शैतान का बंदी और परमेश्वर का शत्रु बन गया। शैतान ने परमेश्वर के चरित्र को गलत तरीके से प्रस्तुत किया, और मनुष्य, जो ईश्वरीय स्वरूप में बनाया गया था,(मनुष्य), ने अपने स्वर्गीय पिता के प्रेम पर संदेह किया, उसके वचन पर अविश्वास किया, और उसकी माँगों के विरुद्ध हठी अविश्वास और विद्रोह में लीन हो गया। बाइबल इको, 1 नवंबर, 1892

एक दिव्य दर्पण की आवश्यकता है.

इस अंधकार को दूर करने के लिए, ब्रह्मांड को पिता के चरित्र के प्रकटीकरण की आवश्यकता थी। यह प्रकटीकरण केवल वही दे सकता था जो परमेश्वर के व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष प्रतिरूप था।

> इब्रानियों 1:2-3 [परमेश्वर] ने इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि की रचना की। (3) जो उस की महिमा का प्रकाश,

> [चरित्र] और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है। जब वह पापों को धोकर ऊंचे पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा,

पूरे ब्रह्मांड के लिए एक जीवंत दर्पण स्थापित किया जाएगा ताकि हम एक सच्चा मापदंड प्राप्त कर सकें जिससे हम समझ सकें कि परमेश्वर का चरित्र कैसा है और कैसा नहीं। केवल यीशु ही पिता का यह पूर्ण और सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व कर सकते थे।

> यूहन्ना 1:18 परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा; एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया।
>
> मसीह मनुष्य के लिए पिता का प्रतिनिधित्व करने आए। उन्होंने संसार के सामने परमेश्वर के स्वरूप को प्रकट किया। शैतान ने पिता का गलत चित्रण किया था। उसने उन्हें एक ऐसे प्राणी के रूप में चित्रित किया था जो प्रतिशोध से भरा हुआ था, जिसमें न तो सहनशीलता थी, न दया, न धैर्य, न प्रेम। उसने उन्हें अपने गुणों से सुसज्जित किया; परन्तु मसीह आए और उन्होंने मानवता को धारण किया, ताकि मानवता को पिता का वास्तविक स्वरूप प्रकट कर सकें; और हमें संसार के सामने मसीह का प्रतिनिधित्व उसी प्रकार करना है जैसे मसीह ने पिता का प्रतिनिधित्व किया था। {आरएच, 30 अप्रैल, 1889 अनुच्छेद 8}

हमें पिता के चरित्र के इस दर्पण के सही आयामों को जानने के लिए अत्यंत सावधान रहना चाहिए। हमें पुराने नियम में मसीह का उल्लेख मिलता है। क्या ये कहानियाँ उस दर्पण का हिस्सा हैं या हमें इन कहानियों को नए नियम में दिए गए दर्पण के माध्यम से समझना चाहिए?

बहुत से लोग मानते हैं कि वे पुराने नियम की कहानियों को बिना किसी मध्यस्थ के, या बिना किसी दिव्य दर्पण के पढ़ सकते हैं जो उन्हें जो पढ़ रहे हैं उसकी समझ का मार्गदर्शन करे। यह बिना दया-आसन के परमेश्वर की व्यवस्था को सीधे देखने जैसा है। परमेश्वर की व्यवस्था एक दर्पण है और यदि हम मसीह में हुए बिना और उसके चरित्र को जाने बिना उस दर्पण को सीधे देखते हैं, तो व्यवस्था में जो चित्र हम देखेंगे वह हमारे अपने चेहरे का प्रतिबिंब होगा। तब हम उस प्रतिबिंब में जो है, उसके आधार पर परमेश्वर के चरित्र का आकलन करेंगे।

> परमेश्वर का नियम वह दर्पण है जो मनुष्य का सम्पूर्ण प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है, जैसा वह है, और उसके सामने सही समानता प्रस्तुत करता है। FW 31

दो दर्पण

यदि हम सुसमाचार में दूसरा दर्पण देखे बिना इस व्यवस्था को देखें, तो हम आसानी से यह सोचने की गलती कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारे जैसा है।

> उन्होंने दो महान सिद्धांतों को दोहराया, कि व्यवस्था ईश्वरीय पूर्णता का प्रतिलेख है, और जो व्यक्ति व्यवस्था से प्रेम नहीं करता, वह सुसमाचार से प्रेम नहीं करता; क्योंकि व्यवस्था, सुसमाचार की तरह, परमेश्वर के सच्चे चरित्र को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है। GC 465

जब हम सुसमाचार के प्रतिबिंबित दर्पण के माध्यम से परमेश्वर की व्यवस्था को देखते हैं, तो वह हमें अपना चरित्र प्रकट करता है। हम व्यवस्था के शब्दों में हत्या न करने, चोरी न करने और व्यभिचार न करने के बारे में पढ़ सकते हैं, लेकिन ये केवल शब्द हैं

और केवल मसीह के सांसारिक जीवन के जीवंत रंगों में ही अर्थ पा सकते हैं। व्यवस्था आध्यात्मिक है, केवल कानूनी नहीं।

मूसा की पहली पाँच पुस्तकें व्यवस्था या तोराह हैं। अगर हम इन पुस्तकों में परमेश्वर के बारे में कहानियों को सुसमाचार की झलक के बिना पढ़ें, तो परमेश्वर के चरित्र के बारे में पढ़ते समय हम उस व्यवस्था में अपना ही चेहरा देखेंगे। जलप्रलय की कहानी ही लीजिए।

> उत्पत्ति 6:7 फिर यहोवा ने कहा, मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा डालूंगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगने वाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी; क्योंकि मुझे उनके बनाने से पछताना पड़ता है।
>
> उत्पत्ति 6:17 और देख, मैं आप पृथ्वी पर जलप्रलय करके सब प्राणियों को, जिन में जीवन के श्वास हैं, आकाश के नीचे से नाश करने पर हूं, और पृथ्वी पर जो कुछ है वह मर जाएगा।

अगर आप इस कहानी को मसीह के जीवन में हमें दिए गए दर्पण को ध्यान में रखे बिना पढ़ेंगे, तो हम स्वाभाविक रूप से यह मान लेंगे कि परमेश्वर ने स्वयं उन सभी को मार डाला। अगर आप सीधे व्यवस्था को देखें, तो इस निष्कर्ष से बचना असंभव है। ऐसा क्यों है?

> रोमियों 3:10-16 जैसा लिखा है, कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। (11) कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। (12) वे सब के सब भटक गए, वे सब मिलकर निकम्मे हो गए; कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं। (13) उनका गला खुली हुई कब्र है;

> उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है;उनके होठों पर नाग विष रहता है। (14) उनका मुँह शाप और कड़वाहट से भरा है। (15) उनके पाँव खून बहाने को तत्पर हैं। (16) उनके मार्गों में विनाश और क्लेश है।

मनुष्य स्वभाव से ही प्रतिशोधी और विनाशकारी होता है। व्यवस्था विशेष रूप से इसी उद्देश्य से लिखी गई है कि जब हम इसे पढ़ते हैं तो हम इसे स्पष्ट कर सकें। जब हम प्रभु के बारे में पढ़ते हैं तो हम अपने चरित्र को उस पर आरोपित कर देते हैं। हम उसकी कल्पना बिल्कुल अपने जैसा ही करते हैं।

> भजन संहिता 50:20-21 तू बैठा हुआ अपने भाई की निन्दा करता है; तू अपनी ही माँ के बेटे की निन्दा करता है। (21) तू ने ये काम किए, और मैं चुप रहा; तू ने मुझे अपने समान ही समझा; परन्तु मैं तुझे डाँटूँगा, और तेरे साम्हने ये बातें समझाऊँगा।

जब यीशु कनानी स्त्री के प्रति चुप रहे तो शिष्यों ने भी यही किया।

> मत्ती 15:22-23 और देखो, उसी देश से एक कनानी स्त्री निकली और उससे चिल्लाकर कहने लगी, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर; मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रही है।" (23) परन्तु उसने उसे एक बात का उत्तर न दिया। तब उसके चेले उसके पास आकर उससे विनती करने लगे, "उसे विदा कर दे, क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती है।"

शिष्यों ने मसीह की चुप्पी को नस्लीय असहिष्णुता समझा। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की रचना इस तथ्य को प्रकट करने के लिए इस प्रकार की गई है। पुराने नियम के वचन विशेष रूप से यह परखने के लिए लिखे गए हैं कि आप बाइबल

को मसीह के जीवन के माध्यम से पढ़ते हैं या परमेश्वर के चरित्र के बारे में अपनी गिरी हुई धारणाओं के माध्यम से।

ज़्यादातर लोग कहते हैं कि वे बाइबल को वैसे ही पढ़ते हैं जैसे वह पढ़ी जाती है। लेकिन हम बाइबल को न्याय और दया के अपने विचारों के अनुसार पढ़ते हैं। हम पुराने नियम को तब तक ठीक से नहीं पढ़ सकते जब तक हम इसे धरती पर यीशु के जीवन के पूर्ण जीवनी प्रतिबिंब के माध्यम से न पढ़ें। हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर के विचार हमारे विचार नहीं हैं। लेकिन यीशु परमेश्वर के विचारों की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हैं।

> रोम 16:25-26 अब जो तुम्हें मेरे सुसमाचार और यीशु मसीह के सुसमाचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाशन के अनुसार जो जगत के आरम्भ से गुप्त रहा। (26) परन्तु अब प्रगट होकर भविष्यद्वक्ताओं के पवित्र शास्त्रों के द्वारा, सनातन परमेश्वर की आज्ञा से, सब जातियों को बताया गया है, कि वे विश्वास से आज्ञाकारी हों।

मध्यस्थ के माध्यम से कानून तक पहुँचना

परमेश्वर के चरित्र का सत्य पुराने नियम में समर्पित है। यीशु हमें जो देते हैं, वह भी इससे अलग नहीं है। लेकिन हमारी शारीरिक प्रकृति परमेश्वर के चरित्र के संबंध में भविष्यवक्ताओं के वचनों को गलत समझती है। इसलिए यीशु इसे हमारे सामने स्पष्ट, सुंदर और अद्भुत ढंग से प्रकट करते हैं।

> 1 यूहन्ना 2:7-8 हे भाइयो, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा, बल्कि वही पुरानी आज्ञा लिख रहा हूँ जो आरम्भ से तुम्हारे पास है। पुरानी

> आज्ञा वह वचन है जिसे तुम आरम्भ से सुनते आए हो। (8) फिर मैं तुम्हें एक नई आज्ञा लिख रहा हूँ, जो उसमें और तुम में सच्ची है: क्योंकि अंधकार टल गया है और सच्चा प्रकाश अभी चमक रहा है।

जिस प्रकार इस्राएल, मसीह के प्रतिनिधि मूसा की प्रत्यक्ष मध्यस्थता के बिना परमेश्वर के निकट नहीं पहुँच सकता था, उसी प्रकार हम भी मसीह के चरित्र की मध्यस्थता के बिना परमेश्वर के निकट नहीं पहुँच सकते। माउंट सिनाई की कहानी हमें एक शब्द-चित्र प्रदान करती है कि हम परमेश्वर के पास कैसे पहुँच सकते हैं। यदि हम पर्वत पर आते हैं और मसीह की मध्यस्थता के बिना उस पर चढ़ने का प्रयास करते हैं, तो परमेश्वर के चरित्र के बारे में हमारी अपनी गलत धारणाएँ हमें छेद देंगी और हमें छेद देंगी।

> निर्गमन 19:12-13 और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ बाँधकर कहना, कि सावधान रहो, तुम पर्वत पर न चढ़ो, और न उसके सिवाने को छूओ; जो कोई पर्वत को छूए वह निश्चय मार डाला जाए। (13) कोई उसे हाथ से न छूए, परन्तु वह निश्चय पत्थरवाह किया जाए, वा तीर से छेदा जाए; चाहे वह पशु हो चाहे मनुष्य, वह जीवित न बचे। जब नरसिंगा देर तक बजता रहे, तब लोग पर्वत पर आएं।

लोगों ने परमेश्वर की महिमा की व्याख्या भस्म करने वाली आग के रूप में की।

> निर्गमन 24:16-18 और यहोवा का तेज सीनै पर्वत पर रहा, और बादल उस पर छः दिन तक छाया रहा; और सातवें दिन उसने बादल के बीच में से मूसा को बुलाया। (17) और यहोवा का तेज इस्राएलियों की दृष्टि में पर्वत की चोटी पर भस्म करने वाली आग के समान दिखाई पड़ा। (18)

> और मूसा बादल के बीच में गया, और पर्वत पर चढ़ गया; और मूसा चालीस दिन और चालीस रात पर्वत के ऊपर रहा।

लोगों ने पहाड़ को देखा और ईश्वर के चरित्र के बारे में अपनी धारणाओं के अनुसार उस दृश्य की व्याख्या की। ईश्वर के बारे में उनका जो दृष्टिकोण था, वह मिस्र में बिताए उनके समय से प्रभावित था। मिस्र के देवता हिंसक, अत्याचारी और हत्यारे थे। जब मूसा पहाड़ से नीचे उतरे, तो उनका चेहरा ईश्वर के चरित्र के अनमोल सत्य से चमक उठा।

> इस चमक के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल पर अपनी व्यवस्था के पवित्र, उच्च स्वरूप और मसीह के माध्यम से प्रकट किए गए सुसमाचार की महिमा का प्रभाव डालने की योजना बनाई। जब मूसा पहाड़ पर था, तब परमेश्वर ने उसे न केवल व्यवस्था की पटियाएँ, बल्कि उद्धार की योजना भी प्रस्तुत की। उसने देखा कि मसीह का बलिदान यहूदी युग के सभी रूपों और प्रतीकों में पूर्व-चित्रित था; और यह कलवारी से प्रवाहित होने वाला स्वर्गीय प्रकाश था, जो परमेश्वर की व्यवस्था की महिमा से कम नहीं था, जिसने मूसा के चेहरे पर ऐसी चमक बिखेरी। पृष्ठ 330

कलवरी के प्रकाश के माध्यम से, मूसा को परमेश्वर की व्यवस्था की वास्तविक व्याख्या करने का अनुग्रह दिया गया। इसका उसके चरित्र पर क्या प्रभाव पड़ा?

> गिनती 12:3 (मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से अधिक नम्र स्वभाव का था।)

यह एक पूर्ण चमत्कार था कि मूसा को प्रभु के चरित्र की सुंदरता देखने का अवसर मिला। चालीस साल पहले, मूसा पर एक अलग आत्मा का शासन था।

> मूसा ने सोचा था कि मिस्र के ज्ञान में उसकी शिक्षा उसे इस्राएलियों को दासता से मुक्त कराने के लिए पूरी तरह योग्य बनाती है। क्या वह सेनापति बनने के लिए आवश्यक सभी बातों में पारंगत नहीं था? क्या उसे देश के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों का लाभ नहीं मिला था? हाँ, उसे लगा कि वह अपने लोगों को मुक्ति दिला सकता है। उसने उनके पापों का निवारण करके उनका अनुग्रह प्राप्त करने का प्रयास करके अपना कार्य आरंभ किया। उसने एक मिस्री को मार डाला जो इस्राएलियों में से एक पर अत्याचार कर रहा था। ऐसा करके उसने उस व्यक्ति की भावना प्रकट की जो शुरू से ही एक हत्यारा था, और स्वयं को दया, प्रेम और कोमलता के परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने के लिए अयोग्य सिद्ध किया। CT 407.1

मसीह की मध्यस्थता के माध्यम से, मूसा को सनातन वाचा के सिद्धांत सिखाए गए। सुसमाचार के दर्पण के माध्यम से वह मसीह के इतने समान हो गया कि वह कह सका:

> व्यवस्थाविवरण 18:15 तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य में से, अर्थात् तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तुम उसकी सुनना;

यह मसीह की भविष्यवाणी है। मूसा ने कहा था कि आने वाला नबी उसके जैसा होगा। कितना अद्भुत! फिर भी मूसा के चरित्र को अत्याचारी, स्वार्थी और हत्यारा समझा गया।

> ईर्ष्या ने ईर्ष्या को जन्म दिया था, और ईर्ष्या ने विद्रोह को। उन्होंने मूसा के इतने बड़े अधिकार और सम्मान के अधिकार के प्रश्न पर तब तक

चर्चा की, जब तक कि वे उसे एक अत्यंत ईर्ष्यापूर्ण पद पर आसीन मानने लगे, जिसे उनमें से कोई भी उसके समान ही ग्रहण कर सकता था। और उन्होंने स्वयं को और एक-दूसरे को यह सोचकर धोखा दिया कि मूसा और हारून ने स्वयं ही उन पदों को ग्रहण कर लिया है जिन पर वे थे। असंतुष्ट लोगों ने कहा कि इन अगुवों ने याजकपद और शासन का कार्यभार अपने ऊपर लेकर स्वयं को प्रभु की मण्डली से ऊपर उठा लिया है, परन्तु इस्राएल में उनके घराने को दूसरों से श्रेष्ठता का अधिकार नहीं है; वे लोगों से अधिक पवित्र नहीं हैं, और उनके लिए अपने भाइयों के समान स्तर पर होना ही पर्याप्त होना चाहिए, जिन्हें परमेश्वर की विशेष उपस्थिति और सुरक्षा का समान रूप से अनुग्रह प्राप्त है।

षड्यंत्रकारियों का अगला काम लोगों के साथ था। जो लोग गलत हैं और फटकार के पात्र हैं, उनके लिए सहानुभूति और प्रशंसा से बढ़कर और कुछ भी नहीं है। और इस प्रकार कोरह और उसके साथियों ने ध्यान आकर्षित किया और मण्डली का समर्थन प्राप्त किया। यह आरोप कि लोगों के बड़बड़ाने से उन पर परमेश्वर का क्रोध आया है, एक भूल घोषित किया गया। उन्होंने कहा कि मण्डली का कोई दोष नहीं था, क्योंकि वे अपने अधिकारों से अधिक कुछ नहीं चाहते थे; बल्कि मूसा एक दबंग शासक था; उसने लोगों को पापी कहकर फटकारा था, जबकि वे पवित्र लोग थे और प्रभु उनके बीच था। पृष्ठ 397

बार-बार, लोगों ने मूसा पर जंगल में उन्हें मारने की कोशिश करने का आरोप लगाया। वह यीशु के प्रेमपूर्ण और सौम्य चरित्र को प्रतिबिंबित कर रहा था, लेकिन उन्होंने इसे कुछ और ही समझ लिया। यह ठीक वैसी ही प्रक्रिया है जो आज पुराने नियम के पाठ में भी देखने को मिलती है। जब मूसा कलवारी के सुंदर प्रकाश के साथ नीचे आया, तो लोगों ने मूसा से कहा कि वह अपने चेहरे पर एक घूँघट डाल ले। लोग कलवारी के

प्रकाश में परमेश्वर के चरित्र को समझना नहीं चाहते थे। उन्होंने यह मानना पसंद किया कि परमेश्वर उनके जैसा ही है; अधीर, क्रोधित और प्रतिशोधी।

> 2 कुरिं 3:13-15 और वे मूसा के समान नहीं थे, जिस ने अपने मुंह पर परदा डाला था, कि इस्राएली उस नाश होने वाली बात का अन्त न देख सकें। (14) परन्तु उन की बुद्धि अंधी हो गई थी, इसलिये कि आज तक पुराने नियम के पढ़ने में वही परदा नहीं उठता; वह मसीह में उठा दिया गया है। (15) परन्तु आज तक भी जब मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है, तो वह परदा उन के हृदयों पर पड़ा रहता है।

अगर हम पुराने नियम को सुसमाचार के दर्पण के बिना पढ़ेंगे, जो हमें परमेश्वर के चरित्र तक पहुँचने का मार्ग दिखाता है, तो हम व्यवस्था के दर्पण को सही ढंग से नहीं पढ़ पाएँगे। हम इसे अपनी आँखों पर पर्दा डालकर पढ़ेंगे और परमेश्वर के चरित्र को अपने जैसा ही समझेंगे। सुसमाचार वह दिव्य माध्यम है जिसके माध्यम से हम व्यवस्था को देख सकते हैं, जो कि स्रोत है।

वेल हटाना

जब हम भविष्यवाणी की आत्मा की ओर मुड़ते हैं, तो हमें इस बात के प्रचुर प्रमाण मिलते हैं कि मसीह का पार्थिव जीवन वास्तव में उनके पिता के चरित्र का पूर्ण और सम्पूर्ण प्रकटीकरण है। एक बार जब हमारे पास यह दर्पण होता है, तो हमारे पास सुसमाचार में एक मध्यस्थ होता है जो हमें परमेश्वर की व्यवस्था में दर्पण की सुंदरता तक पहुँचने में मदद करता है। एक बार जब हम यीशु की आत्मा से भर जाते हैं, तो हम व्यवस्था में जो देखते हैं वह सुंदर और अनमोल होता है। जैसा कि पवित्रशास्त्र हमें बताता है:

> 2 कुरिं 3:18 परन्तु जब हम सब के उघाड़े हुए चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जैसे दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके अंश अंश करके बदलते जाते हैं।

जब सुसमाचार के प्रकाशित दर्पण के माध्यम से पर्दा हटा दिया जाता है, तब हम परमेश्वर के चरित्र को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। यह प्रक्रिया तब होती है जब हम नई वाचा में प्रवेश करते हैं। यह आत्मा का उपहार ही है जो हमारी आँखों से पर्दा हटाता है और हमें अपने पिता को सही ढंग से देखने में मदद करता है।

> 2 कुरिं 3:6-10 उसी ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया, शब्द के नहीं, वरन आत्मा के; क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है। परन्तु यदि मृत्यु की वाचा जो पत्थरों पर लिखी और खोदी हुई थी, यहां तक तेजोमय थी कि मूसा के मुख के तेज के कारण इस्राएल उसके मुख को निहार नहीं सकते थे, जिस तेज का लोप हो जाना था, तो (8) तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? (9) क्योंकि यदि दण्ड की वाचा तेजोमय थी, तो धार्मिकता की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? (10) क्योंकि जो तेजोमय थी, वह उस तेज के कारण जो उत्तम थी, तेजोमय न ठहरी।

जब इस्राएलियों ने मूसा का चेहरा देखा, तो वे उसे देख नहीं पाए क्योंकि परमेश्वर के बारे में उनकी समझ के अनुसार उन्हें उसमें भस्म करने वाली आग दिखाई दे रही थी। पुराने नियम में होने के कारण, वे मूसा को ठीक से नहीं देख पाए। उन्होंने उससे अपना चेहरा ढकने के लिए कहा। आज हमने ऐसा कैसे किया है? हमने पुराने और नए नियमों की व्याख्या दो अलग-अलग व्यवस्थाओं के रूप में की है। पुस्तिका देखें।*ऑगस्टाइन के वाचा के चश्मे को त्यागना*इस बारे में अधिक जानकारी के लिए

देखें। व्यवस्था और सुसमाचार को अलग करके, दूसरा दर्पण, जिसका उद्देश्य पहले की व्याख्या करना था, व्यवस्था से अलग हो जाता है। यह परमेश्वर की व्यवस्था के चेहरे पर एक पर्दा डाल देता है और व्यवस्था को उसके सही प्रकाश में देखने की किसी भी संभावना को समाप्त कर देता है। जिस प्रकार प्राचीन इस्राएल ने मूसा से अपना चेहरा ढकने के लिए कहा था, उसी प्रकार एडवेंटिस्ट ने गलतियों में वाचाओं और व्यवस्था के बारे में अपने संदेश में जोन्स और वैगनर को चुप कराने की कोशिश करके अपने चेहरे पर एक पर्दा डाल दिया।

1888 की इस असफलता का दुखद परिणाम यह हुआ कि एडवेंटिस्टों ने पुराने नियम को पढ़ते हुए परमेश्वर के चरित्र की अपनी समझ को पूरी तरह से भेद दिया। उनके हृदय पर अभी भी पर्दा पड़ा है और परमेश्वर उनके लिए एक अत्याचारी बना हुआ है जो अपने शत्रुओं का हिंसक रूप से नाश करता है - ठीक वैसे ही जैसे हम अपने पुराने स्वभाव में करते थे।

सुसमाचार दर्पण की परिभाषा

यहाँ कुछ उद्धरण दिए गए हैं जो आपको बताते हैं कि यीशु ने धरती पर रहते हुए अपने पिता का पूरा चरित्र कैसे प्रकट किया। निम्नलिखित उद्धरण को ध्यान से पढ़ें।

> सुसमाचार में प्रकट प्रेम, सम्मान और पूर्णता मनुष्य के लिए परमेश्वर के चरित्र का प्रकटीकरण हैं। मसीह के चरित्र में जो न्याय, भलाई और परोपकारिता दिखाई देती थी, वही उन लोगों के जीवन में दोहराई जानी चाहिए जो सुसमाचार के विशेषाधिकारों को स्वीकार करते हैं। वचन के अध्ययन द्वारा, हमें उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में देखना है, और

उनकी दिव्य पूर्णता के दर्शन से मंत्रमुग्ध होकर, हमें उसी स्वरूप में विकसित होना है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि सुसमाचार प्रभु की महिमा [चरित्र] को पूर्णतः प्रकट करता है। यह वह दर्पण है जो परिवर्तित आत्मा के लिए परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करता है। परमेश्वर की समानता उनके पुत्र के पूर्ण चरित्र में प्रकट होती है, ताकि हम समझ सकें कि परमेश्वर के स्वरूप के सदृश बनने का क्या अर्थ है, और यदि हम निरंतर देखते हुए स्वयं को "महिमा से महिमा में" बदलने दें, तो हम क्या बन सकते हैं। {एसटी 24 फ़रवरी, 1909, अनुच्छेद 3}

आइये इस उद्धरण को बिंदुवार संक्षेप में प्रस्तुत करें।

1. सुसमाचार में प्रकट किया गया प्रेम, आदर और पूर्णता मनुष्य के लिए परमेश्वर के चरित्र का प्रकटीकरण है।

2. **न्याय** और **अच्छाई** और **भलाई**जो चरित्र में देखा गया ईसा मसीह सुसमाचार के विशेषाधिकारों को स्वीकार करने वालों के जीवन में दोहराया जाना चाहिए...

3. शब्द के अध्ययन के द्वारा हमें उसे वैसे ही देखना है जैसे वह है, और उसकी दिव्य पूर्णता के दृश्य से मंत्रमुग्ध होकर हमें उसी छवि में विकसित होना है।

4. हमें यह समझने की ज़रूरत है कि सुसमाचार प्रभु की महिमा [चरित्र] को पूरी तरह से प्रकट करता है।

5. यह [सुसमाचार] वह दर्पण है जो परिवर्तित आत्मा के लिए परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करता है। [तो यह स्पष्ट है कि परमेश्वर के चरित्र को देखने के लिए हमें परिवर्तित होना होगा।]

6. परमेश्वर की समानता उसके पुत्र के सिद्ध चरित्र में प्रकट होती है, ताकि हम समझ सकें कि परमेश्वर के स्वरूप की समानता में बनाए जाने का क्या अर्थ है

7. [यह] हम ऐसे बन सकते हैं यदि हम निरंतर देखते हुए स्वयं को "महिमा से महिमा" में बदलने दें।

भविष्यवाणी की आत्मा कहती है कि सुसमाचार परमेश्वर के चरित्र को पूरी तरह से प्रकट करता है। इसमें न केवल परमेश्वर की दया प्रकट होती है, बल्कि उसका न्याय भी प्रकट होता है। यह न्याय मसीह के चरित्र में प्रकट होता है। इस सुसमाचार के दर्पण से हम परमेश्वर के संपूर्ण चरित्र को देख सकते हैं और परमेश्वर के बारे में अपने झूठे विचारों के कारण उसकी तलहटी में भय से काँपने के बजाय, हम पुराने नियम में सीनै पर्वत पर वापस जाकर उसकी चोटी पर मूसा से बातचीत कर सकते हैं।

> जिन लोगों ने परमेश्वर के आशीर्वाद का अनुभव किया है, उन्हें सबसे अधिक कृतज्ञ होना चाहिए। उन्हें परमेश्वर के प्रति धन्यवाद के शब्द भेजने चाहिए क्योंकि मसीह पापमय शरीर के सदृश आए, अपनी दिव्यता को मानवता का वस्त्र पहनाया, ताकि वे अपने चरित्र में संसार के सामने परमेश्वर की पूर्णता ला सकें। वे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने आए, एक कठोर न्यायाधीश के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रेममय पिता के रूप में। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" परमेश्वर प्रेम है। यही वह महान सत्य था

जिसे प्रकट करने के लिए मसीह संसार में आए। शैतान ने संसार के सामने परमेश्वर के चरित्र को इतना गलत ढंग से प्रस्तुत किया था कि मनुष्य परमेश्वर से दूर हो गया; परन्तु मसीह संसार को पिता के गुणों को प्रदर्शित करने, उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छवि प्रस्तुत करने आए। "जैसा पिता ने मुझे आज्ञा दी, वैसा ही मैं करता हूँ।" "यह आज्ञा मुझे अपने पिता से मिली है।" संसार के लिए मसीह के मिशन का उद्देश्य पिता को प्रकट करना था। {एसटी, 11 अप्रैल, 1895 पैरा. 2}

मसीह ने अपने चरित्र में परमेश्वर की पूर्णता को संसार में उतारा। उन्होंने उसे एक कठोर न्यायाधीश के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रेममय पिता के रूप में प्रकट किया। मसीह पिता के गुणों को प्रदर्शित करने के लिए संसार में आए। न केवल दया के गुण, बल्कि न्याय के भी। इस धोखे में न रहें कि मसीह ने अपने पिता के चरित्र के एक अंश को छिपाकर रखा और केवल बाद में पापियों को कुचलने और नष्ट करने के लिए ही कोमल गुण प्रदर्शित किए। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि परमेश्वर के चरित्र का हर अंश उनके पुत्र में पृथ्वी पर उनके मिशन के दौरान प्रकट हुआ था।

मसीह ने परमेश्वर के चरित्र को ऊंचा किया, उसे स्तुति दी और पृथ्वी पर अपने मिशन के संपूर्ण उद्देश्य का श्रेय उसे दिया—परमेश्वर के प्रकटीकरण के माध्यम से मनुष्यों को सही मार्ग पर लाना। मसीह में मनुष्यों के सामने पिता का पितृत्व अनुग्रह और अद्वितीय सिद्धियाँ सजी थीं। क्रूस पर चढ़ने से ठीक पहले अपनी प्रार्थना में, उन्होंने घोषणा की, "मैंने तेरा नाम प्रकट किया है।" "मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है; मैंने वह कार्य पूरा किया है जो तूने मुझे करने के लिए दिया था।" जब उनके मिशन का उद्देश्य पूरा हुआ,—संसार के लिए परमेश्वर का प्रकटीकरण,—परमेश्वर के पुत्र ने घोषणा की कि उनका कार्य पूरा हो

गया है, और पिता का चरित्र मनुष्यों के लिए प्रकट हो गया है। {एसटी जनवरी 20, 1890, अनुच्छेद 9}

मसीह ने पृथ्वी पर अपने पिता की महिमा की या उनके चरित्र का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपने चरित्र का कोई अंश प्रकट नहीं किया। उन्होंने उसका पूरा-पूरा प्रकटीकरण किया। उनके मिशन का उद्देश्य संसार के लिए परमेश्वर का प्रकटीकरण था। पिता की स्तुति हो कि उन्होंने अपने पुत्र को हमारे पास भेजा ताकि हम सुसमाचार के दर्पण में पिता के चरित्र को देख सकें। हम अपने पिता के सच्चे प्रेम के बारे में गहरे अंधकार में थे और यीशु हमें यह दिखाने आए कि वह वास्तव में कैसे हैं। अब मैं कुछ उदाहरण सूचीबद्ध करूंगा ताकि आपको पता चल सके कि इस विषय को बार-बार कहा गया है।

यदि वे स्वर्ग में राजपरिवार के सदस्य बनना चाहते हैं, तो उन्हें पृथ्वी पर स्वर्ग के सिद्धांतों का पालन करना होगा। हमारे संसार में मसीह का जीवन परमेश्वर के चरित्र की सर्वोच्च उत्कृष्टता का अपने चरित्र में प्रतिनिधित्व प्रस्तुत करने के लिए था। उनके वचन जीवन देने वाले थे, ताकि उनके वचनों और कार्यों से वे उनके चरित्र की सच्ची समझ प्राप्त कर सकें।

मसीहियों को एक क्षण के लिए भी यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्हें सभी बातों में मसीह का अनुयायी होना है। {Ms11-1895.10}

ऐसा ही होता आया है, और अंत समय तक ऐसा ही रहेगा। पाप शैतान का गुण है, और यह हमेशा अच्छाई के विरुद्ध ताना मारता है। कैन की आत्मा सभी झूठे धर्मों में प्रकट होती है। शैतान का काम निंदा करना और विनाश करना, मनुष्य की स्वतंत्रता छीनना और उसका जीवन नष्ट

करना है। अपराध हमेशा मनुष्यों को शैतान के दूतों के रूप में कार्य करने, परमेश्वर और धार्मिकता के विरुद्ध उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है। नासरत में मसीह ने घोषणा की कि उनका कार्य पुनर्स्थापना और उत्थान, शांति और सुख लाना है। वे इस संसार में पिता का प्रतिनिधित्व करने आए, और उन्होंने मृतकों को जीवन देकर, बीमारों और पीड़ितों को स्वस्थ और स्वस्थ करके अपनी दिव्य शक्ति प्रकट की। वे इस संसार में जीवन के वृक्ष के रूप में थे। शैतान, ईश्वरीय पुनर्स्थापक, मसीह के साथ युद्ध कर रहा है। उसके दूत, मनुष्य को उन्नत और श्रेष्ठ बनाने के उद्धारकर्ता के कार्य के विरुद्ध ताना मार रहे हैं। हमारे संसार में पहली मृत्यु शैतान के सिद्धांतों के कार्यान्वयन के कारण हुई थी; और तब से मसीह और उनके अनुयायी उसकी घातक घृणा के पात्र रहे हैं। {एसटी 21 मार्च, 1900, पैरा 13-15}

परमेश्वर के पुत्र, यीशु के माध्यम से, पिता संसार के सामने और भी अधिक पूर्ण रूप से प्रकट होते हैं। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा: "यदि तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते; और अब से तुम उसे जानते हो, और उसे देख भी चुके हो। फिलिप्पुस ने उससे कहा, "हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे, और यही हमारे लिए बहुत है।" यीशु ने उससे कहा, "हे फिलिप्पुस, मैं इतने समय से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है।" आज हज़ारों आत्माएँ पुकार रही हैं, "हमें पिता को दिखा दे, और हम तृप्त हो जाएँगे। जब तक हम उसे नहीं देखते, तब तक हम परमेश्वर को अपना पिता नहीं कह सकते।" यीशु ऐसे हर एक प्राणी से कहते हैं, जैसा उन्होंने फिलिप्पुस से कहा था: "'मैं इतने लंबे समय से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तुम मुझे नहीं जानते?' क्या तुमने मेरे काम देखे हैं, क्या तुमने मेरी शिक्षाएँ सुनी हैं, क्या तुमने मेरे पिता के नाम से मेरे द्वारा किए गए

चमत्कारों को देखा है, और फिर भी क्या तुम परमेश्वर के स्वरूप को नहीं समझे? मैंने तुम्हारे साथ और तुम्हारे लिए प्रार्थना की है, और फिर भी क्या तुम यह नहीं समझ सकते कि मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ, और अपने जीवन में मैंने अपने पिता का चरित्र तुम्हारे सामने प्रकट किया है? मैं अपने पिता की महिमा का प्रकाश हूँ, मैं उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छवि हूँ। 'क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता; परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है; या फिर मेरे कामों के कारण ही मेरा विश्वास करो। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जो मुझ पर विश्वास करता है, जो काम मैं करता हूँ, वह भी करेगा; वरन इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।'" {एसटी जून 9, 1890, पैरा. 1}

अपने जीवन की पवित्रता में उन्होंने पिता को प्रकट किया था, और परमेश्वर की महिमा उनके चरित्र से चमक उठी थी। पिता की पूर्णता अविनाशी संसारों, स्वर्गीय बुद्धिजीवियों और पापी मनुष्यों के समक्ष प्रकट हुई थी। मसीह के मध्यस्थीय कार्य में, परमेश्वर का प्रेम अपनी पूर्णता में मनुष्यों और स्वर्गदूतों के समक्ष प्रकट हुआ। प्रलोभन पर विजय पाकर और जंगल में परीक्षा सहकर, हमारे लिए विजय पाकर, वह कलवारी की ओर अपने कदम बढ़ाते हैं, और मानवता की पूर्णता में वे संसार को समझते हैं, और अपनी दिव्यता की पूर्णता में वे परमेश्वर के सिंहासन पर विराजमान होते हैं, और शत्रु के साथ अपने भयंकर संघर्ष का परिणाम घोषित करते हुए कहते हैं, "अब इस संसार का राजकुमार निकाल दिया गया है," अब अंतिम शत्रु का नाश हो गया है। {एसटी 27 जून, 1895, अनुच्छेद 7}

परमेश्वर का पुत्र इस पृथ्वी पर मनुष्यों को पिता का चरित्र प्रकट करने आया, ताकि वे आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करना सीख सकें। वह संसार में सत्य का बीज बोने आया था। उसके पास ज्ञान के सभी खजानों की कुंजियाँ थीं, और वह विज्ञान के द्वार खोलने और ज्ञान के अनदेखे भण्डारों को प्रकट करने में सक्षम था, यदि यह मोक्ष के लिए आवश्यक होता। वह प्रकाश जो संसार में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रकाशित करता है, सत्य का प्रत्येक पहलू उसके लिए प्रत्यक्ष था। {CT 28.2}

परमेश्वर के बारे में मनुष्य को जो कुछ भी जानना चाहिए या जान सकता है, वह सब उसके पुत्र के जीवन और चरित्र में प्रकट हुआ है। "परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा; एकलौता पुत्र, जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रकट किया है।" यूहन्ना 1:18 मानवता को अपने ऊपर लेकर, मसीह मानवता के साथ एकाकार हो गए और साथ ही पापी मनुष्यों के सामने हमारे स्वर्गीय पिता को प्रकट किया। वह सभी बातों में अपने भाइयों के समान बने। वह देहधारी हुए,जैसे हम हैं। वह भूखे, प्यासे और थके हुए थे। उन्हें भोजन से पोषण मिलता था और नींद से ताज़गी मिलती थी। उन्होंने मनुष्यों के समान जीवन जिया, फिर भी वे परमेश्वर के निर्दोष पुत्र थे। वे पृथ्वी पर एक अजनबी और प्रवासी थे—संसार में, पर संसार के नहीं; आज के पुरुषों और स्त्रियों की तरह परीक्षा और परीक्षा से गुज़रे, फिर भी पाप से मुक्त जीवन जी रहे थे। कोमल, करुणामय, सहानुभूतिपूर्ण, दूसरों के प्रति सदैव विचारशील, उन्होंने परमेश्वर के चरित्र का प्रतिनिधित्व किया, और निरंतर परमेश्वर और मनुष्य की सेवा में लगे रहे। "वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया।" पद 14. "जिन

मनुष्यों को तू ने जगत में से मुझे दिया, उन पर उसने कहा, मैं ने तेरा नाम प्रगट किया, कि जो प्रेम तू ने मुझ से रखा, वह उनमें रहे।" यूहन्ना 17:6,

ए. आर. वी., 26. "अपने शत्रुओं से प्रेम करो," उसने उन्हें आज्ञा दी; "जो तुम्हें शाप देते हैं, उन्हें आशीर्वाद दो; जो तुमसे घृणा करते हैं, उनके प्रति भलाई करो और जो तुम्हारा अपमान करते और तुम्हें सताते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो; ताकि तुम अपने स्वर्गीय पिता की संतान ठहरो;" "क्योंकि वह धन्यवाद न करनेवालों और बुरों पर भी कृपालु है।" "वह अच्छे और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है।" "इसलिए तुम भी दयावान बनो, जैसा तुम्हारा पिता दयावान है।" मत्ती 5:44, 45; लूका 6:35, 36. 8T 286

परमेश्वर का संपूर्ण चरित्र उसके पुत्र में प्रकट हुआ, स्वर्ग की समस्त संभावनाएँ उस अनंत परमेश्वर के पुत्र में मनुष्य की स्वीकृति के लिए प्रदर्शित हैं। मनुष्य के परमेश्वर और स्वर्ग की ओर लौटने का मार्ग बिना किसी बाधा के है। उद्धारकर्ता के प्रेम की अतुलनीय गहराई प्रदर्शित की गई है; और यदि मानव संतानों के लिए परमेश्वर के प्रेम का यह प्रकटीकरण मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल नहीं होता, तो ऐसा कुछ भी नहीं है जो कभी भी ऐसा कर सके। — समय के संकेत, 30 दिसंबर, 1889, अनुच्छेद 6

परमेश्वर ने हमारे लिए जो कुछ भी अधूरा छोड़ा है, उसे पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उसने अपने पुत्र के चरित्र में अपने चरित्र का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है; और मसीह के अनुयायियों का यह कर्तव्य है कि वे, उनके जीवन और चरित्र की अतुलनीय उत्कृष्टता को देखते हुए, उनकी समानता में बढ़ते जाएँ। जैसे-जैसे वे यीशु की ओर

देखते हैं और उनके प्रेम का उत्तर देते हैं, वे मसीह की छवि को प्रतिबिंबित करेंगे (रिव्यू एंड हेराल्ड, 15 फ़रवरी, 1898)।

शैतान ने परमेश्वर पर उन गुणों का आरोप लगाया जो स्वयं परमेश्वर में थे। मसीह इस संसार में परमेश्वर के वास्तविक स्वरूप को प्रकट करने के लिए आए। वे पिता परमेश्वर के पूर्ण प्रतिनिधि हैं। इस पृथ्वी पर मानव रूप में जिया गया उनका निष्पाप जीवन, परमेश्वर के चरित्र पर शैतान के आरोप का पूर्ण खंडन है। बाइबल प्रशिक्षण विद्यालय, 1 अक्टूबर 1902

यह सुसमाचार दर्पण किस समय-सीमा के भीतर पूर्णतः प्रकट हुआ?

यूहन्ना 14:9 यीशु ने उससे कहा, "हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है; फिर तू क्यों कहता है, कि पिता को हमें दिखा?" केवल मसीह ही मनुष्यों के लिए पिता का प्रतिनिधित्व कर सकता था, और शिष्यों को यह प्रतिनिधित्व देखने का सौभाग्य तीन वर्षों से भी अधिक समय से प्राप्त हुआ था। DA 664

यीशु ने जो कुछ प्रकट किया वह परमेश्वर के बारे में मनुष्यों के विचारों के बिल्कुल विपरीत था।

स्वर्ग से गुरु, जो परमेश्वर के पुत्र से कम महत्वपूर्ण नहीं थे, पृथ्वी पर पिता के चरित्र को मनुष्यों पर प्रकट करने आए, ताकि वे आत्मा और सच्चाई से उनकी आराधना कर सकें। मसीह ने मनुष्यों को यह तथ्य प्रकट किया कि रीति-रिवाजों और औपचारिकताओं का कठोरतम पालन उन्हें नहीं बचाएगा; क्योंकि परमेश्वर का राज्य अपने स्वरूप में

आध्यात्मिक था। मसीह संसार में सत्य का बीजारोपण करने आए। उनके पास ज्ञान के सभी खजानों की कुंजियां थीं, और वे विज्ञान के द्वार खोलने और ज्ञान के अनदेखे भण्डारों को प्रकट करने में सक्षम थे, यदि यह मोक्ष के लिए आवश्यक होता। उन्होंने मनुष्यों के सामने वह प्रस्तुत किया जो परमेश्वर के चरित्र के संबंध में शत्रु के चित्रणों के बिल्कुल विपरीत था, और मनुष्यों पर पिता के पितृवत प्रेम का प्रभाव डालने का प्रयास किया, जिसने "जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" [यूहन्ना 3:16.] उन्होंने मनुष्यों पर प्रार्थना, पश्चाताप, स्वीकारोक्ति और पाप के त्याग की आवश्यकता पर बल दिया। उसने उन्हें ईमानदारी, सहनशीलता, दया और करुणा सिखाई, और उन्हें न केवल उनसे प्रेम करने का आदेश दिया जो उनसे प्रेम करते थे, बल्कि उनसे भी जो उनसे घृणा करते थे, जो उनके साथ बुरा व्यवहार करते थे। ऐसा करके वह उन्हें पिता का चरित्र प्रकट कर रहा था, जो सहनशील, दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से क्रोध करने वाला, और भलाई और सच्चाई से परिपूर्ण है। जो लोग उसकी शिक्षा को स्वीकार करते थे, वे स्वर्गदूतों के संरक्षण में थे, जिन्हें दृढ़ करने, ज्ञान देने, ताकि सत्य आत्मा को नवीनीकृत और पवित्र कर सके। {CE 74.1}

यीशु का पृथ्वी पर मिशन क्या था?

अपने सांसारिक मिशन का वर्णन करते हुए, यीशु ने कहा, "प्रभु ने मुझे कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए अभिषेक किया है; उसने मुझे टूटे मनवालों को चंगा करने, बंदियों को मुक्ति का, अंधों को दृष्टि देने का और कुचले हुओं को छुड़ाने का सुसमाचार सुनाने के लिए भेजा है।"

लूका 4:18। यही उसका कार्य था। वह भलाई करता और शैतान के सताए हुए सभी लोगों को चंगा करता फिरा। ऐसे पूरे गाँव थे जहाँ किसी भी घर में बीमारी का एक शब्द भी नहीं था, क्योंकि वह उनके बीच से गुज़रा था और उनके सभी बीमारों को चंगा किया था। उसके कार्य ने उसके दिव्य अभिषेक का प्रमाण दिया। प्रेम, दया और करुणा उसके जीवन के प्रत्येक कार्य में प्रकट हुए; उसका हृदय मानव संतानों के प्रति कोमल सहानुभूति से भर गया। उसने मनुष्य का स्वभाव धारण किया, ताकि वह मनुष्य की आवश्यकताओं तक पहुँच सके। सबसे गरीब और सबसे विनम्र व्यक्ति भी उसके पास आने से नहीं डरते थे। यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी उसकी ओर आकर्षित होते थे। वे उसके घुटनों पर चढ़कर उसके प्रेम से भरे, विचारशील चेहरे को निहारना पसंद करते थे। यीशु ने सत्य के एक भी शब्द को दबाया नहीं, बल्कि उसे हमेशा प्रेम से कहा। लोगों के साथ अपने व्यवहार में उन्होंने अत्यंत चतुराई और विचारशील, दयालु ध्यान का प्रयोग किया। वे कभी असभ्य नहीं रहे, कभी अनावश्यक रूप से कठोर शब्द नहीं बोले, कभी किसी संवेदनशील आत्मा को अनावश्यक पीड़ा नहीं दी। उन्होंने मानवीय दुर्बलता की निंदा नहीं की। उन्होंने सत्य बोला, लेकिन हमेशा प्रेम से। उन्होंने पाखंड, अविश्वास और अधर्म की निंदा की; लेकिन जब उन्होंने अपनी तीखी फटकारें दीं, तो उनकी आवाज़ में आँसू थे। वे यरूशलेम के लिए रोए, उस शहर के लिए जिससे वे प्रेम करते थे, जिसने उन्हें, मार्ग, सत्य और जीवन को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उन्होंने उन्हें, उद्धारकर्ता को, अस्वीकार कर दिया था, लेकिन उन्होंने उन पर दयापूर्ण कोमलता से विचार किया। उनका जीवन आत्मत्याग और दूसरों के प्रति विचारशील देखभाल का जीवन था। उनकी दृष्टि में प्रत्येक आत्मा अनमोल थी। जहाँ उन्होंने स्वयं को सदैव दिव्य गरिमा के साथ धारण किया, वहीं उन्होंने परमेश्वर के परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति अत्यंत

कोमल सम्मान के साथ नमन किया। सभी मनुष्यों में उन्होंने पतित आत्माओं को देखा, जिन्हें बचाना उनका मिशन था। ऐसा ही मसीह का चरित्र उनके जीवन में प्रकट हुआ। यही परमेश्वर का चरित्र है। पिता के हृदय से ही ईश्वरीय करुणा की धाराएँ, जो मसीह में प्रकट होती हैं, मानव संतानों तक प्रवाहित होती हैं। यीशु, कोमल और दयालु उद्धारकर्ता, "देह में प्रकट" परमेश्वर थे। 1 तीमुथियुस 3:16। एससी 11,12

मसीह शैतान की गलतफहमियों को पलटने के लिए आया था।

शैतान ने ईश्वर के चरित्र को गलत तरीके से प्रस्तुत किया है। उसने उसे अपने गुणों से सुसज्जित किया है। उसने उसे एक अडिग और कठोर व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। उसने मनुष्यों और ईश्वरीय एक के बीच अपनी छाया डालकर, संसार को ईश्वर के वास्तविक चरित्र को देखने से रोक दिया था। मसीह उस छाया को हटाने के लिए हमारे संसार में आए। वे पिता का प्रतिनिधित्व करने आए। उन्होंने कहा, "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है।" उन्होंने प्रार्थना की कि उनके शिष्य उनके साथ एक हो जाएँ, जैसे वे पिता के साथ एक थे। मनुष्यों ने घोषित किया है कि मसीह के साथ यह एकता असंभव है, लेकिन मसीह ने अपने जीवन और बलिदान के गुणों के माध्यम से हमें अपने साथ सामंजस्य स्थापित करके इसे संभव बनाया है। हमें ईश्वर के प्रेम और शक्ति पर संदेह क्यों करना चाहिए? हमें इस प्रश्न के विश्वास पक्ष में स्वयं को क्यों नहीं रखना चाहिए? क्या आप यीशु के आकर्षण और आकर्षण को देखते हैं? तो उनके पदचिन्हों पर चलने का प्रयास करें। वह संसार के सामने पिता को प्रकट करने के लिए आया था, और उसने हमें मानव संतानों के प्रति अपने प्रेम, पवित्रता, भलाई और कोमल सहानुभूति को दर्शाने का कार्य सौंपा है। {एसटी, 15 अप्रैल, 1889 पैरा. 6}

जब तक मनुष्य परमेश्वर को उस रूप में नहीं जान लेते जिस रूप में मसीह ने उन्हें प्रकट किया है, वे कभी भी दिव्य समानता के अनुरूप चरित्र नहीं बना पाएँगे, और इसलिए परमेश्वर को कभी नहीं देख पाएँगे। स्वर्ग के स्वर्गदूतों के लिए यह आश्चर्य की बात है कि जो लोग एक बार परमेश्वर को जान चुके हैं, वे लापरवाह हो जाते हैं, अपने मन को किसी भी सांसारिक कार्य में लीन होने देते हैं, और अपना ध्यान स्वर्ग के परमेश्वर से हटा लेते हैं, जिससे वे स्वेच्छा से और स्वेच्छा से अपने रचयिता को भूल जाते हैं, और उसके स्थान पर अन्य प्रभुओं और अन्य देवताओं को स्थापित कर लेते हैं।

वह दिन आ गया है जब अनेक स्वामी और अनेक देवता हैं, और शैतान ने परमेश्वर और मानव आत्मा के बीच में आने का निश्चय किया है, ताकि मनुष्य परमेश्वर के नियमों का पालन करते हुए उसकी पूजा न करें। शैतान ने अपने चारों ओर दिव्य चमक के वस्त्र ओढ़ लिए हैं, और वह मनुष्यों के पास ज्योतिर्मय दूत के रूप में आता है। वह दोषी आत्मा को चीज़ों को विकृत दृष्टि से देखने के लिए विवश करता है, जिससे वह उससे घृणा करता है जिससे उसे प्रेम करना चाहिए, और उससे प्रेम करता है जिससे उसे घृणा और तिरस्कार करना चाहिए। परमेश्वर उसके सामने इतना गलत रूप में प्रस्तुत किया गया है कि वह सच्चे और जीवित पिता को अपने ज्ञान में बनाए रखने की परवाह नहीं करता, बल्कि झूठे देवताओं की पूजा करने लगता है। वह नहीं जानता कि परमेश्वर का प्रेम अद्वितीय है, फिर भी मसीह ने उस प्रेम को पतित संसार के सामने प्रकट किया है। यूहन्ना संसार से परमेश्वर के अद्भुत प्रेम को देखने का आह्वान करते हुए कहता है, "देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम

परमेश्वर के पुत्र कहलाएँ; इसलिए संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे नहीं जाना।" {आरएच, 9 मार्च, 1897 अनुच्छेद 10}

मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में परमेश्वर की पवित्रता प्रकट होती है; क्योंकि मसीह पिता को प्रकट करने आए थे। शैतान ने मानवता के मार्ग में अपनी छाया डाली थी और परमेश्वर के चरित्र को गलत तरीके से प्रस्तुत किया था। शैतान का विवाद तब भी समाप्त नहीं हुआ जब उसे स्वर्ग के दरबार से निकाल दिया गया। वह परमेश्वर के दरबार में मसीह के पद के कारण उनसे घृणा करता था, और जब उसे स्वयं सिंहासन से उतार दिया गया, तो वह उनसे और भी अधिक घृणा करने लगा। जब वह एक बर्बाद दुनिया में पापियों की एक जाति पर दया और करुणा प्रकट करने आए, तो उन्होंने उनसे घृणा की। महायाजकों और फरीसियों के माध्यम से शैतान की घृणा परमेश्वर के मेमने के प्रति प्रकट हुई, जो जगत के पापों को उठा ले जाता है। {एसटी, 11 दिसंबर, 1893 अनुच्छेद 8}

यीशु की गवाही पूरी तरह से स्पष्ट है। हमारे उद्धारकर्ता अपनी भविष्यवक्ता, एलेन व्हाइट के माध्यम से हमें स्पष्ट रूप से बताते हैं कि वे अपने पिता के चरित्र का एक पूर्ण और सम्पूर्ण प्रकटीकरण देने के लिए इस पृथ्वी पर आए थे। अब हम उनके पुत्र के सुसमाचार के दर्पण में पिता के पास बिना किसी भय के जा सकते हैं। सुसमाचार पिता के प्रति हमारी अनजाने में उत्पन्न शत्रुता को दबा देता है ताकि जब हम उनके पास जाएँ, तो हमारी शत्रुता व्यवस्था के दर्पण में प्रतिबिम्बित न हो और हमें मार न डाले।

हम इस सिद्धांत को याद रखते हैं कि जैसा हम न्याय करेंगे, वैसा ही हमारा भी न्याय किया जाएगा। मत्ती 7:2. यदि परमेश्वर के प्रति अपवित्र भय और क्रोध से भरे हुए

लोग उसके पास जाने का प्रयास करते हैं, तो परमेश्वर और उसके चरित्र के बारे में उनकी धारणाएँ स्वयं ही अपना न्याय घोषित कर देती हैं।

> भजन संहिता 90:11 तेरे क्रोध की शक्ति को कौन जानता है? तेरे भय के अनुसार ही तेरा क्रोध भी भड़कता है।

ऊपर दिए गए क्रोध के लिए हिब्रू शब्द अफ है जिसका अर्थ है नाक में तेजी से सांस लेना। जब एक भौतिक आदमी इस शब्द को अपनी समझ के अनुसार पढ़ता है, तो इसका अर्थ बदले की भावना से पैदा हुआ क्रोध होना चाहिए। सुसमाचार के आईने के प्रकाश में इसका अर्थ धीरज और इच्छा से पैदा हुआ जुनून है, जैसे कि बूढ़े पिता ने अपने बेवफा बेटे की ओर अपनी नाक में तेजी से सांस लेते हुए दौड़ लगाई थी। यदि हम सुसमाचार के आईने के बिना व्यवस्था के पास जाते हैं, तो उत्पन्न होने वाला तीव्र भय तीव्र क्रोध के उभार की धारणा पैदा करता है। सुसमाचार के आईने की सहायता से भय शुद्ध आदर और पवित्र आनंद है। जुनून का उभार शुद्ध प्रेम और भक्ति का है। हम वे लोग हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि भय क्या है और जुनून का उभार क्या है।

जहाज़ से दया का आसन न हटाएँ

यही सिद्धांत बेतशेमेश के लोगों पर भी लागू होता है

> 1 शमूएल 6:19 और उसने बेतशेमेश के लोगों को इसलिये मारा, कि उन्होंने यहोवा के सन्दूक के भीतर झाँका था; उसने उन लोगों में से पचास हजार सत्तर पुरुष मारे; और लोगों ने विलाप किया, क्योंकि यहोवा ने बहुत से लोगों को बड़े संहार से मारा था।

जब इन लोगों ने सन्दूक का ढक्कन हटाया, तो उन्होंने सीधे व्यवस्था के दर्पण पर अपनी नज़र डाली और व्यवस्था पर अपने हत्यारे चेहरे देखे और इसे परमेश्वर का चरित्र मान लिया, जबकि वास्तव में यह उनका अपना था। उन्होंने सचमुच खुद को मौत के घाट उतार दिया। सन्दूक से ढक्कन हटाने की गलती के लिए न्याय की उनकी अपनी धारणाओं का उन पर ही प्रहार हुआ। इसलिये वे बिना किसी मध्यस्थ के सन्दूक के पास गए थे, इसलिए उन्होंने खुद को उस व्यक्ति के हाथों में सौंप दिया जो सबसे पहले बिना किसी मध्यस्थ के परमेश्वर के पास जाना चाहता था - शैतान। इन लोगों को यह समझ लेना चाहिए था कि सन्दूक को केवल याजकों द्वारा ही संभाला जाना था और बिना किसी मध्यस्थ के उसके पास जाना उनके लिए मुसीबत का कारण होगा। अधिकांश लोग इस अंश को यह मानकर पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं उन्हें अपने हाथों से मारा है। मसीह के सुसमाचार के दर्पण के प्रकाश में यह स्पष्ट हो जाता है कि वे अपने ही भय से मारे गए थे। परिणामस्वरूप, जिस न्याय के बारे में वे मानते थे कि दुष्टों को दंड मिलना चाहिए, वह उन पर आ पड़ा।

पुराने नियम को पढ़ते समय बहुत से लोग यही कर रहे हैं। वे सुसमाचार के दर्पण के बिना सीधे व्यवस्था पढ़ते हैं। यह अभ्यास ऐसा करने वाले हर एक व्यक्ति को मार डालेगा क्योंकि अगर आप सुसमाचार के दर्पण के बिना परमेश्वर के पास जाएंगे, तो परमेश्वर के बारे में आपकी अपनी धारणा ही आपको दोषी ठहराएगी। आपके भय के अनुसार ही परमेश्वर का क्रोध होगा।

मेरी प्रार्थना है कि आप भविष्यवाणी की आत्मा के उद्धरणों को ध्यान से पढ़ें और उनके साथ यूहन्ना 17 को भी पढ़ें। आप देखें कि सुसमाचार का दर्पण मसीह के सांसारिक जीवन में पूरी तरह से परिभाषित है। यह दर्पण आपको पुराने नियम की कहानियों को पढ़ने के लिए सही लेंस प्रदान करेगा। नए नियम के सुसमाचार पुराने नियम की व्यवस्था के लिखित मध्यस्थ हैं। संदूक में व्यवस्था को मसीह के जीवन के उस अनमोल आवरण के बिना न देखें।

सुसमाचार के दर्पण को देखने में मेरे लिए सबसे मूल्यवान बात यह है कि हम पाते हैं कि मसीह ने कभी किसी को नहीं मारा - कभी नहीं।

मसीह ने कभी किसी को नहीं मारा... Ms62-1886.64

इसलिये मसीह पिता की प्रत्यक्ष छवि हैं, इसका अर्थ है कि पिता ने कभी किसी को नहीं मारा। अगर उन्होंने किसी को मारा है, तो परमेश्वर के चरित्र का सुसमाचार दर्पण चकनाचूर हो जाता है और परमेश्वर अंततः हमारे जैसे ही हो जाते हैं। मैं यह विश्वास करना पसंद करता हूँ कि मसीह ने वास्तव में पिता का नाम हम पर प्रकट किया है। यह जानकर मुझे अपार आनंद मिलता है। जब मैं उस उद्धारकर्ता के दर्पण में देखता हूँ जिसने अपने शत्रुओं से प्रेम किया और उनके लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया, तो मुझे उन लोगों के प्रति अपने स्वाभाविक झुकाव की दुष्टता का गहरा एहसास होता है जो मेरे बारे में बुरा बोलते हैं या मुझे किसी भी तरह से नुकसान पहुँचाते हैं। मैं पुकारता हूँ, "हे प्रभु, मुझ पापी पर दया करो!"

दो दर्पण
व्यवस्था और सुसमाचार

उन्होंने दो महान सिद्धांतों को दोहराया, कि व्यवस्था ईश्वरीय पूर्णता की प्रतिलिपि है, और जो व्यक्ति व्यवस्था से प्रेम नहीं करता, वह सुसमाचार से प्रेम नहीं करता;**क्योंकि व्यवस्था और सुसमाचार दोनों ही परमेश्वर के सच्चे चरित्र को प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण हैं.**जीसी 465

सुसमाचार में प्रकट प्रेम, सम्मान और पूर्णता मनुष्य के लिए परमेश्वर के चरित्र का प्रकटीकरण हैं। मसीह के चरित्र में जो न्याय, भलाई और परोपकारिता दिखाई देती थी, वही उन लोगों के जीवन में दोहराई जानी चाहिए जो सुसमाचार के विशेषाधिकारों को स्वीकार करते हैं। वचन के अध्ययन द्वारा, हमें उसे वैसा ही देखना है जैसा वह है, और उसकी दिव्य पूर्णता के दर्शन से मंत्रमुग्ध होकर, हमें उसी छवि में विकसित होना है।**हमें यह समझने की ज़रूरत है कि सुसमाचार प्रभु की महिमा [चरित्र] को पूरी तरह से प्रकट करता है.यह वह दर्पण है जो परिवर्तित आत्मा को परमेश्वर का चरित्र प्रकट करता है परमेश्वर** की समानता उसके पुत्र के सिद्ध चरित्र में प्रकट होती है, ताकि हम समझ सकें कि परमेश्वर की छवि की समानता में बनाए जाने का क्या अर्थ है, और हम क्या बन सकते हैं यदि हम लगातार देखते हुए अपने आप को "महिमा से महिमा" में बदलने की अनुमति देते हैं।

24 फरवरी, 1909